

## Padma Shri



### **SMT. USHA BARLE**

Smt. Usha Barle is a renowned performer of Pandwani and Panthi art forms of Chhattisgarh. Pandwani is a folk song form performed in Chhattisgarh, which describes the story of the Pandavas, the main characters in the epic Mahabharata and Panthi is a traditional dance of Chhattisgarh. She has used these art forms to spread awareness among women about their rights and make people aware about Government plans/schemes for dangerous diseases like AIDS, Malaria.

2. Born on 2<sup>nd</sup> May, 1968, Smt. Barle is an 'A' Grade Artist of Akashwani Doordarshan Kendra Raipur. She has performed Pandwani and Panthi on all Akashwani channels. She has performed not only in various States of India but also in cities like New York and London. To name a few cities where she has performed Pandwani and Panthi are, Delhi, Bhopal, Gwalior, Kanpur, Uraiv Ramnagariya, Jaipur, Indore, Jhabua, Maharashtra, Kolkata, Allahabad etc.

3. Smt. Barle has the honour to perform Pandwani and Panthi on the occasion of Indian Republic Day, 2006. She also performed these art forms at Indira Sangeet Kala Vidyalaya, New Delhi and Geet Sangeet Natya Academy, New Delhi. She has been a regular performer of Pandwani and Panthi on the occasions of Rajyotsava Mela and Lok kala Mahotsav. In the year 2007, she popularized these art forms in New York and London through her performance. She has spread messages on the life of Guru Ghasidas and Mini Mata not only in Chhattisgarh but also in other states through cassettes and CD of 'Chouka Vistar'.

4. Smt. Barle is a recipient of many awards/honours for her valuable contribution to the society and these traditional art forms of Chhattisgarh including Bhuiya Samman, Gaika Samman, Nehru Yuva Samman, Chakradhar Samman, Rajiv Samman, Guru Ghasi Das Samaji Chetna Puruskar, Totran Bai Mirche Samman, Mini Mata Samman, Swarna Padak Samman on Girodipuridham etc.



## श्रीमती उषा बारले

श्रीमती उषा बारले छत्तीसगढ़ के पंडवानी और पंथी कलाओं की प्रसिद्ध कलाकार हैं। पंडवानी छत्तीसगढ़ में प्रस्तुत किया जाने वाला एक लोक गीत है, जिसमें महाभारत महाकाव्य के मुख्य पात्र पांडवों की कथा होती है और पंथी छत्तीसगढ़ का एक पारंपरिक नृत्य है। उन्होंने इन कला रूपों का इस्तेमाल महिलाओं को उनके अधिकारों और लोगों को एड्स, मलेरिया जैसी खतरनाक बीमारियों के लिए सरकारी योजनाओं/परियोजनाओं के बारे में जागरूक बनाने के लिए किया है।

- 2 मई, 1968 को जन्मी, श्रीमती बारले आकाशवाणी, दूरदर्शन केन्द्र रायपुर के 'ए' ग्रेड कलाकार हैं। उन्होंने सभी आकाशवाणी चैनलों पर पंडवानी और पंथी का प्रदर्शन किया है। उन्होंने न सिर्फ भारत के विभिन्न राज्यों बल्कि न्यूयॉर्क और लंदन जैसे शहरों में भी प्रस्तुति दी हैं। दिल्ली, भोपाल, ग्वालियर, कानपुर, उराव रामनगरिया, जयपुर, इंदौर, झाबुआ, महाराष्ट्र, कोलकाता, इलाहाबाद आदि शहरों में उन्होंने पंडवानी और पंथी का प्रदर्शन किया है।
- श्रीमती बारले को भारतीय गणतंत्र दिवस, 2006 के अवसर पर पंडवानी और पंथी की प्रस्तुति देने का गौरव प्राप्त हुआ है। उन्होंने इंदिरा संगीत कला विद्यालय, नई दिल्ली और गीत संगीत नाट्य अकादमी, नई दिल्ली में इन कला रूपों का प्रदर्शन भी किया। वह राज्योत्सव मेला और लोक कला महोत्सव के अवसर पर, पंडवानी और पंथी को नियमित रूप से प्रस्तुत करने वाली कलाकार रही हैं। वर्ष 2007 में, उन्होंने अपने प्रदर्शन के जरिये इन कला रूपों को न्यूयॉर्क और लंदन में लोकप्रिय बनाया। उन्होंने गुरु घासीदास और मिनी माता के जीवन पर 'चौका विस्तार' की कैसेट और सीडी के माध्यम से, छत्तीसगढ़ के साथ-साथ अन्य राज्यों में भी संदेशों का प्रचार-प्रसार किया है।
- श्रीमती बारले को समाज और छत्तीसगढ़ की इन पारंपरिक कलाओं के प्रति उनके बहुमूल्य योगदान के लिए कई पुरस्कार/सम्मान प्राप्त हो चुके हैं, जिनमें भुइया सम्मान, गायिका सम्मान, नेहरू युवा सम्मान, चक्रधर सम्मान, राजीव सम्मान, गुरु घासी दास समाजी चेतना पुरस्कार, तोतरण बाई मिर्चे सम्मान, मिनी माता सम्मान, गिरोड़पुरीधाम पर स्वर्ण पदक सम्मान आदि शामिल हैं।